"जिनमिआ तिन पाया"

• मनै की गति कही न जाई । जे को कहै पिछै पछताई ।
कागदि कलम न लिखणहार । मनै का बहि करनि वीचार ।12।

अर्थः- उस मनुष्य की ऊँची आत्मिक अवस्था बयान नहीं की जा सकती, जिसने अकाल - पुरख के नाम को मान लिया है, भाव, जिसकी लगन नाम में लग गई है । यदि कोई मनुष्य वर्णन करे भी, तो वह पीछे पछताता है कि मैंने होछा प्रयत्न किया है । मनुष्य मिल के नाम में पतीजी हुई आत्मिक अवस्था का अंदाजा लगाते हैं, पर कागज पर कलम से कोई मनुष्य लिखने में समर्थ नहीं है ।

मनै सुरति होवै मनि बुधि । मनै सगल भवण की सुधि । मनै मुहि चोटा न खाइ । मनै जम के साथि न जाइ ।13।

अर्थः- यदि मनुष्य के मन में प्रभु के नाम की लगन लग जाए, तो उसकी अक़्ल ऊँची हो जाती है, उसके मन में जागृति आ जाती है भाव, माया में सोया मनुष्य जाग जाता है सभी भवनों - लोकों की उसको समझ आ जाती है कि हर जगह ईश्वर व्यापक है । वह मनुष्य संसार के विकारों की चोटें मुँह पे नहीं खाता अर्थात, सांसारिक विकार उस पर दबाव नहीं डाल सकते और यमों से उसका वास्ता नहीं पड़ता भाव, वह जन्म - मृत्यु के चक्कर में से बच जाता है ।

मनै मारगि ठाक न पाई । मनै पति सिउ परगट जाइ ।
मनै मग न चलै पंथ । मनै धरम सेती सनबंध ।14।

अर्थः- जिस मनुष्य का मन नाम में पतीज जाए तो जिंदगी के सफर में विकारों की कोई रोक नहीं पड़ती, वह संसार से शोभा कमा के इज्जत के साथ जाता है । उस मनुष्य का धर्म के साथ सीधा जोड़ बन जाता है, वह फिर दुनिया के विभिन्न मजहबों के बताए रास्तों पे नहीं चलता भाव, उसके अंदर ये द्वंद नहीं रहता कि ये रास्ता ठीक है और ये गलत है ।

मनै पावहि मोख दुआर । मनै परवारै साधार । मनै तरै तारे गुरु सिख । मनै नानक भवहि न भिख । ऐसा नाम निरंजन होइ । जे को मनि जाणै मनि कोई ।15। (1-3)

अर्थः- यदि मन में प्रभु के नाम की लगन लग जाए तो मनुष्य 'झूठ' से छुटकारा पाने का रास्ता ढूँढ लेता है । ऐसा मनुष्य अपने परिवार को भी अकाल - पुरख की टेक दृढ़ करवाता है । नाम में मन पतीजने से ही, सतगुरु भी स्वयं संसार सागर से पार लांघ जाता है और सिखों को पार कर देता है । नाम में मन जुड़ने से ही, हे नानक! मनुष्य हरेक की मुथाजगी

नहीं करते फिरते अकाल - पुरख का नाम, जो माया के प्रभाव से परे है, इतना ऊंचा है कि इस में जुड़ने वाला भी उच्च जीवन वाला हो जाता है पर ये बात तभी समझ में आती है जब कोई मनुष्य अपने मन में हरि नाम की लगन पैदा कर ले ।

• जिनी सुण के मनिआ तिना निज घरि वास । गुरमती सालाहि सच हरि पाइआ गुणतास ।

अर्थ:- जिन लोगों ने परमात्मा का नाम सुन के मान लिया भाव, अपने मन को उस नाम स्मरण में डुबो लिया है उनका अपने अंतरात्मे निवास बना रहता है भाव, उनका मन बाहर भटकने से हट जाता है । गुरु की शिक्षा मुताबिक सदा स्थिर प्रभु की महिमा करके वो गुणों के खजाने परमात्मा को ढूंढ लेते हैं ।

सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जास । हिरदै जिन कै हरि वसै तित घटि है परगास ।1।

अर्थ:- जो लोग गुरु के शब्द में रंगे जाते हैं, वो पवित्र आचरण वाले हो जाते हैं, मैं उनके सदा सदके जाता हूं । जो मनुष्यों के हृदय में परमात्मा आ बसता है, उनके उस हृदय में प्रकाश हो जाता है । भाव, सही जीवन जीने की उन्हें सूझ आ जाती है ।

मन मेरे हरि हरि निरमल धिआई । धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाई ।1।

अर्थ:- हे मेरे मन ! पवित्र हरि नाम स्मरण कर । धुरों परमात्मा की हजूरी में से जिन लोगों को अपने माथे पे स्मरण का लेख लिखा मिल जाता है, वह गुरु की शरण पड़ के परमात्मा की याद में तवज्जो जोड़ के रखते हैं ।

हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूर । गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूर ।

अर्थः- हे प्रभु के संत जनो ! ध्यान से देखो, परमात्मा हर जगह व्यापक हरेक के नजदीक बसता है । जिन लोगों ने गुरु की मति ले के उस को हर जगह व्यापक पहचान लिया है, वह उसको सदा अपने अंग - संग देखते हैं । जिन मनुष्यों ने गुण ग्रहण कर लिए हैं परमात्मा उनके मन में सदा बसता है ।

जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवतिआ दूरि । मनमुख गुण तै बाहरे बिन नावै मरदे झूरि ।2।

अर्थः- पर, जिन्होंने औगुण इकट्ठे किये हैं, उन्हें कहीं दूर बसता प्रतीत होता है । अपने मन के पीछे चलने वाले लोग गुणों से वंचित रह जाते हैं, वह प्रभु के नाम के बिना माया की तपश में तप - तप के आत्मिक मौत को आमन्त्रित करते है ।

जिन सबदि गुरु सुणि मनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोई । अनदिन भगती रतिआ मन तन निरमल होई ।

अर्थः- जिन मनुष्यों ने गुरु के शब्द द्वारा परमात्मा का नाम सुन के मान लिया है नाम में स्वयं को ढाल लिया है, उन्होंने अपने मन में उस हरि को हर वक्त स्मरण किया है । हर समय प्रभु भक्ति में रंगे हुए बंदों का मन पवित्र हो जाता है, शरीर भी पवित्र हो जाता है ।

कूड़ा रंग कसुंभ का बिनस जाइ दुख रोई । जिस अंदरि नाम प्रगास है ओह सदा सदा थिर होई ।3।

अर्थः- कुसंभ का रंग जल्दी नाश होने वाला है वह नाश हो जाता है इसी तरह माया का साथ भी चार दिनों का है, और उसके मोह में फंसा

मनुष्य वियोग के दुख में दुखी होता है । जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा के नाम का प्रकाश है वह सदा अडोल चित्त रहता है ।

इह जनम पदारथ पाइ कै हरि नाम न चेतै लिव लाई । पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउर न पाई ।

अर्थः- यह कीमती मनुष्य जन्म हासिल करके भी मूर्ख मनुष्य तवज्जो जोड़ के परमात्मा का नाम नहीं स्मरण करता पर जब पैर फिसल गया जब शरीर ढह पड़ा यहाँ जगत में टिका नहीं रह सकेगा नाम से वंचित रहने के कारण आगे दरगाह में भी जगह नहीं मिलती ।

ओह वेला हथि न आवई अंति गइआ पछताई । जिस नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ।५।

अर्थः- मौत आने से स्मरण का समय नहीं मिल सकता, आखिर मूर्ख जीव पछताता जाता है । जिस मनुष्य पर परमात्मा मेहर की नजर करता है वह परमात्मा के चरणों में तवज्जो जोड़ के माया के कुसंभ मोह से बच जाता है ।

देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाई । जिन गुरमुखि हिरदा सुध है सेव पई तिन थाई।

अर्थः- अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य सब कुछ दिखावे की खातिर करता है, उसे सही जीवन जीने की समझ नहीं आती । पर गुरु के सन्मुख हो के जिस मनुष्यों का हृदय पवित्र हो जाता है, उन की घाल - कमाई प्रभु दर पे स्वीकार हो जाती है ।

हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाई समाई । नानक तिन की बाणी सदा सच है जि नामि रहे लिव लाई । ५। (3-27-28)

अर्थः- वह मनुष्य हरि के गुण गा के हरि के चरणों में लीन हो के नित्य हरि गुण गाते हैं, पढ़ते हैं । हे नानक ! जो मनुष्य प्रभु के नाम में तवज्जो जोड़ के रखते हैं, सदा स्थिर प्रभु की महिमा ही उनकी जीभ पे सदा विराजमान रहती है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"